रिकॉर्डः– इस पाप की दुनिया..... "ॐ" पिताश्री 31/10/1965

ओम शान्ति। बाप कहते हैं, मीठे–2 बच्चों ने गीत सुना और बच्चों की बुद्धि में यह बैठा हुआ है बरोबर यह कलियुग पाप की दुनिया है। सब पाप करते रहते हैं। सबसे जास्ती पाप कौन सा करते हैं? जो अपने बेहद के बाप को गालियाँ देते हैं कि कुत्ते–बिल्ले, कण–2 में हैं। बाप तो बच्चों को कल्प–2 आए करके गति–सद्गति देते हैं। जबकि पतित दुनिया को पावन बनाना होता है तब आते हैं। आकर बच्चों को आप समान बनाते हैं। बाप में कौन सा ज्ञान है? सारे सृष्टिचक्र का ज्ञान है। तुम बच्चे भी इस सृष्टिचक्र को जानते हो। यह सारा सृष्टिचक्र कैसे फिरता है यह बाप में ज्ञान है। इसलिए उनको ज्ञान का सागर कहा जाता है। वो ही पतित–पावन है। इस चक्र को समझ स्वदर्शनचक्रधारी बनने से तुम फिर स्वर्ग के चक्रवर्ती राजा–रानी बनते हो। तो बुद्धि में यह सारा दिन चक्र फिरना चाहिए। तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जावेंगे। फिर सतयुग में तो तुम यह चक्र नहीं फिरावेंगे। वहाँ स्व यानी आत्मा को यह सृष्टिचक्र का ज्ञान नहीं होता है– ना सतयुग में, ना कलियुग में। यह ज्ञान सिर्फ इस संगमयुग पर ही तुमको रहता है। संगमयुग की बहुत महिमा है। कुम्भ का मेला मनाते हैं ना। वास्तव में यह है ज्ञान सागर और नदियों का मेला अर्थात् परमात्मा और आत्माओं का मेला। वो कुंभ का मेला भक्तिमार्ग का है। यह आत्माओं और परमात्मा का मेला इस सुहावने कल्याणकारी युग पर ही होता है जबकि तुम दुख से छूट सुख में जाते हो। इसलिए बाप को दुखहर्ता, सुखकर्ता कहा जाता है। आधा कल्प सुख और आधा कल्प दुख चलता है। दिन और रात आधा–2 होती है ना। मकान भी नया फिर पुराना होता है। नए घर में सुख, पुराने में दुख होता है। दुनिया भी नई और पुरानी होती है ना। आधा कल्प सुख रहता है, फिर मध्य से दुख शुरू होता है। दुख से फिर सुख आता है। दुखधाम से सुखधाम कैसे बनता है? कौन बनाते हैं? यह दुनिया भर में कोई भी नहीं जानते हैं। मनुष्य तो घोर अंधियारे में हैं। सतयुग को (बहुत) लम्बा समय दे दिया है। (अब) सतयुग की आयु बड़ी हो तो आदमी कितने होने चाहिए। वापिस तो कोई भी जाए नहीं सकते हैं। सबको इकट्ठा होना ही है। वापिस तो तब जाए जब बाप आकर घर का रास्ता बतावे। इतनी सब मनुष्य आत्माओं को बाप संगमयुग पर आकर पूरा रास्ता बताते हैं। तुम जानते हो हम 84 जन्मों का चक्कर लगाय आए हैं। सतयुग–त्रेता में हमने कितने जन्म लिए, वहाँ कितने वर्ष कौन–2 राज्य करते है– सारा राज़ बुद्धि में है। सतयुग में हैं 16 कला सम्पूर्ण, फिर 14 कला, फिर उतरती कला होती है। इस समय बहुत दुख है। दुख होता ही है पुरानी दुनिया में। सतयुग को नई दुनिया, कलियुग को पुरानी दुनिया कहा जाता है। अभी है संगम। इस पुरानी दुनिया का विनाश होना है। बाप नई दुनिया बना रहे हैं। तुम पुराने घर से निकल जाए नए घर में बैठेंगे। तुम कहेंगे, इस नए घर के लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं कि नई दुनिया में हम ऊँच पद पावें। बाप सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो। और कोई तकलीफ नहीं देते हैं। तो बाप को याद करना चाहिए ना। कैसे भी समय निकाल उनका फरमान मानना चाहिए; परन्तु माया ऐसी है जो फरमान मानने नहीं देती। बाप के साथ बुद्धियोग लगाने नहीं देती। तुम चाहते भी हो जितना हो सके उस प्रीतम को याद करें; परन्तु माया भुला देती है। कल्प पहले भी तुमने पुरुषार्थ कर इस माया रावण पर जीत (प)हनी है, तब तो सतयुग की स्थापना होती है। जितना जो याद करता है, मददगार बनता है, उतना इज़ाफा भी मिलता है। तो बच्चों को यह नॉलेज अपने मित्र–संबंधियों को जाए समझानी है। निराकार प०पि०प० का फरमान है मुझे याद करो तो मैं तुम्हारे सब दुख दूर कर दूँगा। आधा कल्प के विकर्मों का बोझा सिर पर है। उसको भस्म करने का और कोई उपाय है नहीं। भल गंगा को पतित–पावनी कहते हैं। जमुना आदि को भी पतित–पावनी कहते हैं। जहाँ थोड़ा पानी का टुबका देखा, स्नान करते रहेंगे। समझेंगे, हम पावन हो जावेंगे, पाप कट जावेंगे; परन्तु पानी से थोड़े ही पाप कट सकते हैं। यह स्नान करते–2 तो सब पापात्मा बन पड़े हैं। साधु–संत आदि सब पापात्मा है। पावन दुनिया है ही सतयुग। उनमें राजा–रानी तथा प्रजा सब पावन रहते हैं। यहाँ है ही पतित दुनिया। सब पुकारते हैं हे पतित

पावन आए कर पावन दुनिया स्थापन करूँ; परन्तु पावन दुनिया सतयुग सिवाय बाप के कोई स्थापन कर ना सके। तो यह है नई दुनिया के लिए नया ज्ञान। देने वाला एक ही बाप है। कृष्ण यह ज्ञान नहीं देता। कृष्ण को पतित–पावन नहीं कहा जाता। पतित–पावन तो एक ही निराकार प०पि०प० है, जो पुनर्जन्म रहित है और गीता में नाम डाल दिया है कृष्ण का, जो पूरे 84 जन्म लेते हैं। कितना फर्क हो गया। लिखा हुआ है कृष्ण पूरे 84 जन्म लेते हैं, फिर कलियुग अन्त में सांवरे से गौरा बनते हैं। कृष्णपुरी को ही विष्णु पुरी कहा जाता है। कृष्ण की राजधानी अपनी, राधे की राजधानी अपनी। फिर उन्हों को आपस में सगाई होती है। कृष्ण और राधे कोई भाई–बहन नहीं हैं। भाई–बहन की शादी तो कब होती नहीं। यह बातें अभी तुम्हारी बुद्धि में टपकती रहती हैं। आगे नहीं जानते थे। अभी मालूम पड़ा है राधे–कृष्ण दोनों अलग राजधानी के थे, फिर सगाई हुई। वो ही फिर ल०ना० बने। स्वर्ग के पहले महाराजा–महारानी। शहज़ादे–शहज़ादी अक्षर से वह भाई–बहन समझ लेते हैं। प्रिन्स–प्रिंसेज़ राधे–कृष्ण ही गाए हुए हैं। उन्हों के माँ–बाप का इतना ऊँच मर्तबा नहीं है जितना राधे–कृष्ण है। उनके माँ–बाप का तो नाम है ही नहीं। क्यों? जिन्होंने जन्म दिया वह तो बड़े होने चाहिए ना; परन्तु नहीं। राधे–कृष्ण सबसे ऊँच हैं। उनके ऊपर कोई है नहीं। यह क्यों हुआ? क्योंकि उनके माँ–बाप कम पढ़े हुए हैं। इसलिए उन्हों का नाम जैसे कि है नहीं। राधे–कृष्ण पहले नम्बर में गए हुए हैं। फर्स्ट नम्बर महाराजा–महारानी यह बने हैं। भल जन्म माँ–बाप से लिया; परन्तु नाम इन्हों का है। यह बुद्धि में अच्छी रीति समझना है। जब यहाँ बैठते हो तो यह स्वदर्शनचक्र फिराते रहो। इस चक्कर से पाप भस्म होते अर्थात् रावण का सिर कटता है। यह सतयुग–त्रेता... का चक्कर है ना। हम पहले सो देवता थे, फिर सो क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बने। अब फिर ब्राह्मण बने हैं। फिर हम सो देवता बनेंगे। बाबा ने ओम का अर्थ भी समझाया है। ओम का अर्थ अलग है। हम सो का अर्थ अलग है। शास्त्रों में एक ही (कर दिया) है। वो समझते हैं ओम भगवान है, फिर हम आत्मा सो परमात्मा, परमात्मा सो हम आत्मा कह देते। यह है उलटा। बाप समझाते हैं ओम अर्थात् हम आत्मा हैं। प०पि०प० की संतान हैं। मैं भगवान, यह कोई ओम का अर्थ नहीं है। हम आत्मा निराकार हैं। हमारा बाप भी निराकार है। साकार शरीर का बाप भी साकारी है। हम परमात्मा की संतान हैं तो हमको स्वर्ग की राजधानी ज़रूर चाहिए। वह तो हमारा बाप है ना। बाप हमको स्वर्ग का वर्सा देने आए हैं। आधा कल्प बाद फिर रावण श्राप देते हैं तो तुम दुखी, तमोप्रधान बन जाते हो। फिर बाप आकर सदा सुखी बनने का वर देते हैं। ऐसे नहीं कहते कि चिरंजीव भव। नहीं। कहते हैं, मुझे याद करो तो इस जन्म सहित जो भी जन्म–जन्मांतर के पाप हैं वह भस्म हो जावेंगे। इसको योगाग्नि कहा जाता है। रावण राज्य में सबको पापात्मा ज़रूर बनना है। कोई पवित्र आत्मा हो नहीं सकती। पतित और पावन आत्मा ही बनती है। परमात्मा थोड़े ही बनता है। वह तो सदैव पावन है। वो सबको पावन बनाते हैं। पतित बनाते हैं रावण, फिर बाप आकर पावन बनाय पावन दुनिया का मालिक बनाते हैं। सतयुग में विकार होते नहीं। वह है ही सम्पूर्ण निर्विकारी दुनिया, तब तो देवताओं के आगे जाकर गाते हैं ना आप सर्वगुण सम्पन्न...। यह महिमा शिव के आगे नहीं गावेंगे। जो देवताएँ पवित्र हैं वो ही फिर अपवित्र बनती हैं। पतित से पावन, पावन से पतित बनने का यह दुनिया में खेल है। बाप सुखधाम बनाते हैं, रावण फिर पतित बनाए दुखी कर देते हैं। शिव को कहते ही हैं बाबा। तो वो बाप है। हम हैं सालिग्राम। रुद्र पूजा में भी एक बड़ा लिंग बनाते हैं, बाकी छोटे–2 सालिग्राम बनाते हैं। तो बाप शिव, हम बच्चे सालिग्राम। यह भी तुम जानते हो हम आत्माएँ 84 जन्म लेती हैं। दूसरे धर्म वालों के 84 जन्म नहीं कहेंगे। वो तो आते ही बाद में हैं। समझो, सिक्ख धर्म वालों को 500 वर्ष हुए, तो उनके 500 वर्ष में कितने जन्म होंगे। हम 5000 वर्ष में कितने जन्म लेते हैं वो सब

बैठ समझाते हैं। 8 जन्म सतयुग में, 12 जन्म त्रेता में। फिर द्वापर से पतित बनते हो तो जन्म डबल हो जाते हैं। तुम ब्राह्मणों के ही 84 जन्म हैं। ब्राह्मणों की चोटी मशहूर है। यह ब्राह्मणों का छोटा सा युग है; परन्तु यह बहुत कल्याणकारी है। यहाँ ही तुम सबका कल्याण होता है। रावण अकल्याण करते हैं। बाप आए कल्याण करते हैं। तो बाप की मत पर चल कल्याण करना चाहिए ना। श्रीमत भगवानुवाच्य। शिवबाबा जन्म नहीं लेते। वो तो प्रवेश करते हैं। जन्म तब कहें जब पालना लेवे। वो कब पालना नहीं लेते। अभोक्ता हैं। तुमसे खाना–पीना भी नहीं लेते हैं। सिर्फ कहते हैं मेरी श्रीमत पर चलो। स्वर्ग के तुम मालिक बनो। मुझे तो बनना नहीं है। मैं अभोक्ता हूँ। तो समझना चाहिए बाबा हम आत्माओं को समझा रहे हैं। आत्मा ही समझती है। आत्मा ही बैरिस्टर वा इंजीनियर आदि बनती है। मैं फलाना हूँ, यह आत्मा ने कहा ना। मैं सो देवता था, 8 जन्म लिए फिर हम सो क्षत्रिय बने, 12 जन्म लिए, फिर मैं पतित बनता हूँ। बाप कहते हैं– बच्चे, आत्म–अभिमानी बनो। यह समझने की बात है ना। आत्मा कहती है हम सतयुग में थे तो हम महान आत्मा थे। कलियुग में महान पापात्मा हैं। साधु–संत आदि कोई भी महान आत्मा है नहीं। सबसे महान आत्मा है एक प०पि०प०। वह सदैव पवित्र है। यहाँ तो मनुष्य सदैव पवित्र रहते नहीं। सदैव पवित्र फिर सुखधाम में रहते हैं। त्रेता में भी कुछ कला कम हो जाती है। अभी हमारी चढ़ती कला है। हम स्वर्ग के मालिक बनते हैं। फिर त्रेता में आवेंगे तो 2 कला कम हो जावेगी। 5 विकारों का ग्रहण लगने से काले हो जाते हैं। अभी बाप कहते हैं इन 5 विकारों का दान दो तो यह ग्रहण उतर जाए। फिर तुम सतयुगी सम्पूर्ण देवता बन जावेंगे। पहले–2 देह–अभिमान छोड़ो। काम विकार दान में दो। अन्त में आकर नष्टोमोहा बनना होता है। अभी तुम आत्माओं को स्मृति आई है कि बरोबर हमने 84 जन्म भोगे हैं। द्वापर .... है। इसलिए सब दुखी हैं। क्या राजा–रानी आदि बीमार नहीं होते होंगे? यह भी दुख हुआ ना। है ही दुखी दुनिया। सतयुग है सुखधाम। तो भगवान की श्रीमत मान(ना) चाहिए ना। बेहद के बाप की मत जो ना माने उनको महान कपूत कहा जाता है। कपूत बच्चे को बाप से क्या वर्सा मिलेगा। सपूत बच्चे वर्सा भी अच्छा पाते हैं, जो खुद पवित्र बन औरों को बनाते हैं। बेहद का बाप आत्माओं को बैठ समझाते हैं। हे आत्माएँ, कानों से सुनती हो? कहते हैं, हाँ बाबा, ज़रूर हम आपकी श्रीमत पर चल श्रेष्ठ बनेंगे। ऊँच ते ऊँच भगवान है तो पद भी ज़रूर ऊँच ते ऊँच देंगे ना। स्वर्ग का वर्सा देते हैं आधा कल्प के लिए। लौकिक बाप से तो हद का वर्सा मिलता है अल्प काल का सुख। कलियुग में है ही कागविष्टा समान सुख। इसलिए सन्यासी घर–बार छोड़ देते हैं। वह गृहस्थ धर्म को नहीं मानते हैं। गृहस्थ धर्म तो सतयुग में है। तुम जानते हो इस पढ़ाई से हम विष्णु पुरी में जाते हैं। इसके लिए प०पि०प० हमको पुरुषार्थ करा रहे हैं। भक्तों को यह पता ही नहीं है कि भगवान कौन है, उनका कर्तव्य क्या है, कैसे वो पतित से पावन बनाते हैं। कुछ भी नहीं जानते। अभी तुम पावन बन रहे हो। दुनिया उस पतित–पावन को याद कर रही है। अभी तुम संगमयुग पर खड़े हो। बाकी सब कलियुग में हैं। वो समझते हैं कलियुग तो अजन बच्चा है। तुम जानते हो कलियुग का तो अब विनाश होने पर है। अब हमको सतयुग में जाना है। बाप ने स्मृति दिलाई है। मैं कल्प–2 तुमको वर्सा देता हूँ। तो वर्सा पूरा लेना चाहिए ना। बाप ऐसे थोड़े ही कहते हैं कि यहाँ बैठ जाओ। भल घर–गृहस्थ में रहो। सिर्फ यह स्वदर्शनचक्र फिराते रहो और नष्टोमोहा हो जाओ। मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा ना कोई। हम जानते हैं अब हमारा नया संबंध जुट रहा है। तो पुराने में ममत्व ना रखना चाहिए। नई दुनिया, नई राजधानी से ममत्व रखना है। अब तो मौत बिल्कुल सिर पर सवार है। तैयारी होती रहती है। सतयुग में कब अकाले मृत्यु होता नहीं। सर्प एक पुरानी खल छोड़ नई ले लेते हैं। (जि)तना जास्ती बाप को याद करेंगे उतनी बहुत बड़ी राजाई मिलेगी। सारा मदार है याद पर। अच्छा, (याद)प्यार और गुडमॉर्निंग। ऊँ।